हिन्दी साहित्य और माँ

सम्पादक : डॉ. षिबी सी.

Scanned with CamScanner

माया प्रकाशन
(पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता)
6A/540, II-फ्लोर आवास विकास हंसपुरम्
नौबस्ता, कानपुर-208021
मो० : 07618879266, 09451877266
E-mail : mayaprakashankanpur@gmail.com
ISBN 978-81-934201-3-3
9 788193 420133 >
₹ 400/-

Scanned with CamScanner

ISBN : 978-81-934201-3-3

पुस्तक	:	हिंदी साहित्य और माँ
सम्पादक	:	डॉ. षिबी सी.
स्वत्वाधिकार	:	सम्पादक
प्रकाशक	:	माया प्रकाशन 6A/540, आवास विकास हंसपुरम् कानपुर-208 021 Mo. : 09451877266, 07618879266
E- mail	:	mayaprakashankanpur@gmail.com
संस्करण	:	प्रथम 2017
मूल्य	:	400.00
शब्द सज्जा	:	विष्णु ग्राफिक्स नौबस्ता, कानपुर
मुद्रक	:	साक्षी ऑफसेट यशोदानगर, कानपुर
जिल्दसाज	:	तवारक अली, पटकापुर, कानपुर

HINDI SAHITYA AUR MAA

Editted by : Dr. Shibi C.

Price : Rs. Four Hundred Only.

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

1. साहित्य में मातृत्व की परिकल्पना — 9 - 15
   प्रो. ए. अरविंदाक्षन

2. आधुनिक हिंदी कविता में मातृत्व का चित्रण — 16 - 20
   (केरल की हिन्दी कविता के विशेष सन्दर्भ में)
   डॉ. आर. सेतुनाथ

3. माँ एवं मातृत्व की परिकल्पना : समकालीन हिंदी कविता में — 21 - 29
   डॉ. प्रमोद कोवप्रत

4. मातृत्व की संवेदना और मिथिलेश्वर की कहानियाँ — 30 - 36
   डॉ. मूसा. एम.,

5. माँ परिवार से क्या चाहती है? — 37 - 39
   डॉ. पी. के. अजीत कुमार

6. 'माँ' का मानसिक संघर्ष : भोले बादशाह के संदर्भ में — 40 - 42
   डॉ. जी. शान्ति

7. सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यास में मातृत्व — 43 - 47
   डॉ. सि. मरियट. ए. तेराट्टिल

8. समकालीन हिंदी कविता में मातृत्व का चित्रण — 48 - 53
   डॉ. सिस्टर रोस आन्टो

9. माँ और संतान के बीच बनते बिगड़ते परिवर्तित मूल्य
   ममता कालिया की कहानियों में — 54 - 57
   डॉ. लिसम्मा जौन

10. गुलाब जैसी एक माँ — 58 - 60
    डॉ. ए. एस. सुमेष

11. ब्लॉग कविताओं में माँ — 61 - 65
    डॉ. रंजित. एम.

12. मातृत्व का सार्वभौमिक रूप : रतन की माँ — 66 - 69
    डॉ. टी. ए. आनंद

Scanned with CamScanner

4

मातृत्व की संवेदना और मिथिलेश्वर की कहानियाँ

निश्छल बालिका या बेटी, स्वप्नमयी प्रेमिका, समर्पिता पत्नी, सबकी अपेक्षा करने वाली बहू, कोमल हृदया माँ आदि नारी के विभिन्न रूप होते हैं। इन सब रूपों के साथ –साथ वह अपने स्वार्थों में डूबी एक मानवीय मूर्ति और विविध प्रकार के संघर्षों से जूझती एक औरत भी है। सनातन परम्परा के अनुसार कोई औरत स्वतंत्र होकर जी नहीं सकती। बचपन में उसे पिता के अधीन, जवानी में पति के अधीन तथा बुढ़ापे में पुत्र के अधीन जीना होता है।

नारी के माँ रूप का महत्त्व सबसे बड़ा है। माँ के बिना जीवन संभव नहीं है। माँ जननी है। असहनीय शारीरिक कष्ट के उपरान्त वह शिशु को जन्म देती है। व्यक्तिगत स्वार्थों को त्यागकर, अपने कष्टों को भूलकर वह शिशु का पालन–पोषण करती है। अपनी संतान की सुख के लिए माँ अनेक कष्टों और प्रताड़नाओं को भी सहर्ष स्वीकार कर लेती है। माँ के स्नेह एवं त्याग का पृथ्वी पर दूसरा उदाहरण मिलना सम्भव नहीं है। हमारे शास्त्रों में माँ को देवताओं के समान पूजनीय बताया गया है।

इस संसार में माँ की तुलना किसी अन्य से नहीं की जा सकती। परिवार में माँ का महत्त्व सबसे बड़ा है। पर घर परिवार को सम्भालने के साथ माँ अपनी संतान का पालन–पोषण भी करती है और उसका प्रत्येक दुख–दर्द कम करने के लिए दिन रात सजग रहती है। परिवार के अन्य सदस्य अपने–अपने निजी कार्यों में व्यस्त रहते हैं। परन्तु अधूरी नींद के उपरान्त माँ सदैव संतान के प्रति चिंतित रहती है।

सन्तान को संस्कार प्रदान करने में माँ का विशेष योगदान होता है। माँ ही सन्तान को टहलना–बोलना सिखाती है। आरम्भ में माँ ही सन्तान के अधिक सम्पर्क में रहती है। माँ के मार्गदर्शन में ही सन्तान का विकास होता है। महान संत, महापुरुषों की जीवनी सुनकर माँ सन्तान में महान व्यक्ति बनने के संस्कार कूट–कूट कर भरती है। वह सन्तान को सामाजिक मर्यादाओं का ज्ञान कराती है और उसे उच्च विचारों का महत्त्व बताती है। सन्तान को चरित्रवान बनाने में

Scanned with CamScanner